कुड़ुख-हिंदी कविताएं

पूंप पून

(पुष्पमाला)

अगस्तीन महेश कुजूर



BVP - 1999

22/3/18

8/9

पूंप पून
(पुष्पमाला)

पूंप पून

(पुष्पमाला)

कुड़ुख़-हिंदी कविता

अगस्तीन महेश कुजूर

PYARA
FOUNDATION

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
राँची (झारखण्ड)

मूल्य : 100

प्रकाशक:
प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची-834009,
दूरभाष : 9234301671, ई-मेल : pkfranchi@gmail.com,
वेब पता : www.kharia.in प्रथम संस्करण : जून 2016
टाईपसेटिंग/आवरण : बिर बुरु ओम्पाय मीडिया (आम) 0651-2201261
मुद्रक : शिवशक्ति प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली

PUNP POON

(Kurukh-Hindi poems by **Augustin Mahesh Kujur**)

ISBN : 978-93-81056-60-8

अनय अयङ कत्थ निङहय सुसर ननोन
निङागे उज्जोन निङागे खेऽओन
उर्मी गुसन, उर्मी बेड़ा निङहय दिम तिहा रऽओ
त ङआ अयङ ख़ेख़ेल, अयङ कत्थन सगर खनेम सुमरओन
एन्ने आड़ ख़क्खरडअन का लुखारिन बने सलगाआनुम रऽओन

ओ! मातृभाषा तुम्हारी सेवा करूँ
तेरे लिए जीउ तेरे लिए मरूँ
हर जगह हर समय, मातृभमि मातृभाषा, तुम्हीं मेरा लक्ष्य रहो
ऐसी आड़ मिले कि हर पल यह मशाल प्रज्जवलित करता रहूँ।

हर्द्दआदन

आर गे
तङआ उज्जना भईर
कुड़ुख कत्थ गे नलख नन्जर
आर गे
ने जे अक्कुन अरा बरना बेड़ा नु
इदिन पर्दओर-उज्जत् ओर
इदिन पोक्ता ननोर

उन युगपुरुषों को
जिन्होंने जीवन पर्यन्त
कुड़ुख भाषा के लिए काम किया
उन्हें
जो आज और आने वाले समय मे
इसे सीचेंगे, जीवित रखेंगे
और इसे विकसित करेंगे।

मोकर्का वाख़

गडडी जियाति ओ लग्गदन ददा बर्नाड मिंजसिन, ने जे ई 'पूंप पून' नन् ख़ोड़ना टूड़ना खवरी विगाबाचस दरा चिपत्आ गे हों भरोस चिच्चस पहें बेड़ा मुन्धिम खे़खे़लति चला केरस इ पून नन आस अइत्का होले एवन्दा महबा मनो पहें।

ख़न्न ख़नजलखों ती नींदि ददा होय
निङहय तिगाबऽअना गहि मुल्लिन एन पोल्लोम
एत्आ।

श्रद्धा पूर्वक नमन्!

पूज्य बर्नाड मिंज को जिन्होंने इस कृति के लिए प्रेरणा दी, और प्रकाशन का भी वादा किया था, पर खेद कि असमय वे इस दुनिया से चले गए। काश! यह 'पुष्प माला' उनको अर्पित कर पाता। अब तो उनकी स्मृति ही शेष है।

अश्रु नैन भर जाते हैं जब याद तुम्हारी आती है
प्रेरणा के चन्द शब्द ही अब तो तुम्हारी थाती है।

पेन्छउस तरतले एंड़ बक्

नेख़अन केरका एन्दोय चान् (बीस बरस) ती टूड़ते बेन्दते इबड़ा कत्थ डन्डी इउन्दा खोंड़रा केरा का फहम दिम मला मन्जा। मुदा कएक गोटङ पन्दहे ती पुथि रूपे नु चिपतारऽआ पोल्ला।

इन्तु आल जियाता उड़तुरना घोक्ख छाले रूपे मनमसा, विस्सा-ख़ड़ख़ा, कसा अरा तीनना गही एम्बा सारतआना, खद्द परिया, जोंख़ परिया, बेल्ख़ा अरा छोलदारी, परता-टोड़ङ गही हवाल, तंगआ अखि-पखि नितकीता उज्जना-ओक्कना नु बुका एंवसना भभना सङ्गेम खोड़हन पर्दआ, एज्जआ गे का नेत-नेग गही एब्स्र नन् बच्छबअना चिंहुट खतरी तिगाबडअना गही ओहरा जियनि उर्खखि रऽई।

जोक् नुर्खका-गुडर्का पुना बक्इ पुथि नु टूड़तारआ लगी, एकदा निका बचउर एम्बा गा सारओर दिम पहें पढ़आ टूड़ना नु हों इबड़न अङि थओर अरा कुड़ुख भखन मानी नु अइदको पोल्का ति बोजओर।

चुड़ानु नरमिया जियाति इदिन निम्हय ख़ेक्खा नु हर्छआदन, नीम नेवई ननोर अरा एंग्हय बौसन भैरओर का एन एवन्दा गूटि धजा गही चखा अंड़सा उङ्कन रऽअदन।

अख़ना बलना गे निम्हय सुरत्आना गही असपयंड़ा नु।

अगस्तीन महेश कुजूर

कवि की कलम से

विगत बीसेक वर्षों से इन कविताओं की रचनाएँ बढ़ती गई और अनायास ही संग्रहित होकर प्रकाशन की प्रत्याशा जताने लगी।

मानवीय हृदय में उपजते-पनपते दर्द, आह, कुछ मीठे कुछ कड़वे, सुखद-दुःखद अनुभूतियों का मिश्रण है यह काव्यमाला। बचपन, जवानी, देश, समाज, प्रकृति-पर्यावरण, पलायन, छीनती पुरखा परम्पराओं के इर्द-गिर्द जीते इन्सानों के दर्द का मार्मिक चित्रण, साथ ही सामजिक चेतना को जाग्रत विकसित करने की प्रेरणा व प्रोत्साहन ही काव्य माला का उद्देश्य है।

यहाँ कुछ प्रयोग से वंचित छूटते-बिसरते कुडुख शब्दों के नवीन प्रयोग का प्रयास किया गया है। जो आपको स्वाद दे, रूचिकर लगे, ऐसे शब्दों को व्यापकता मिले, साथ ही इनके प्रयोग से कुडुख साहित्य समृद्ध बने ऐसी मरी शुमेच्छा है।

और अन्त में नम्र हृदय से आपके हाथों यह सुपुंर्द है। आप मेरी क्षमता आँके कि मेरा क्षुद्र प्रयास किस हद तक आपकी पसन्द पा सका है।

आपकी प्रतिक्रिया की प्रत्याशा में

आपका

अगस्तीन महेश कुजूर

शुभेच्छा

कुडुख साहित्य में पहले भी कुडुख कविताएं रची गयी हैं। रची जाती रही हैं। उनमें कुछ बालोपयोगी कुछ समसामयिक आह्वान आधारित कुछ भक्ति रस का पुट लिये हुए कई काव्य रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। उन सब से कुछ अलग इस संग्रह में पलायन, आह्वान श्रृंगार-विरह एवं समाज में टूटते समाजिक परम्पराओं के लिए उठते दर्द सहित विभिन्न आयामों की झलक मिलती है।

कुछ बिसरते कुडुख शब्दों का नवीन प्रयोग अपना कर रचनाकार ने कुडुख साहित्य को समृद्ध करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास किया है। इस कथन में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि यह एक स्तरीय काव्य रचना बन पड़ी है। आशा है कुडुख़ प्रेमी इसके रस का आनन्द लेंगे और रचनाकार को प्रोत्साहित करेंगे।

मेरी ओर से उन्हें तमाम शुभकामनाएं।

डॉ. नारायण भगत

20/2/2016

सम्पर्क : 8521458677

गीत परंपरा में गीतों का यह गुच्छा

आदिवासी समाज गीतों का चितेरा है। गीत उसकी संस्कृति के प्राण हैं। उसकी जीवन परंपरा में ऐसा कोई भी अवसर नहीं है जब वह गीतों को नहीं गाता हो। भारत के आदिवासी समुदायों में गीतों के लिए उरांव समुदाय को बहुत समृद्ध माना जाता है। यह सुखद है कि इसी उरांव समुदाय के अगस्तीन महेश कुजूर अपने गीतों को सुनाने के लिए फुलों का यह गुच्छा लेकर हमारे बीच हाजिर हुए हैं। उनके इस गुच्छे में कुल 21 सरस कुड़ुख कविताएं हैं। हिंदी प्रस्तुतिकरण के साथ। इसलिए अगस्तीन दा के इन गीतों का आनंद वे लोग भी ले सकेंगे जो कुड़ख नहीं जानते हैं।

कुड़ुख गीतों की लिखित परंपरा औपनिवेशिक काल में शुरू हुई। उन दिनों ब्रिटिश प्रशासन और धार्मिक कार्यों में संलग्न कई विद्वान अधिकारियों और मिशनरियों ने आदिवासी समाज कंठ में सदियों से बसे गीतों को लिखित रूप दिया। तब नये भजन गीत भी रचे गए। उस समय से लिखने की परंपरा शुरू हुई और जैसे-जैसे हम आदिवासी लोग शिक्षण, लेखन-पाठन में आगे बढ़े लिखित साहित्य को रचने के काम में तेजी आई।

कुड़ुख गीत-कविता की लिखित परंपरा को विकसित करने में जुलियस तिग्गा, दवले कुजूर, आयता उरांव आदि पहली पीढ़ी के शिक्षित पुरखों ने अगुवाई की। इस दृष्टि से जुलियस तिग्गा का नाम विशेष रूप से लेना जरूरी है जिन्होंने झारखंड आंदोलन में साहित्यिक-सांस्कृतिक

तौर पर हमें अगुवाने का काम किया। झारखंड आंदोलन की मुखपत्रिका 'आदिवासी' के वे वर्षों संपादक रहे। इसके बाद 1949 में उन्होंने कुड़ुख की साहित्यिक पत्रिका 'धुमकुड़िया' की शुरुआत मासिक के रूप में की। इसके पहले 1940 में 'बिज बिनको' निकल कर बंद हो चुकी थी। 'धुमकुड़िया' का स्थान कुड़ुख साहित्य में वही है, जो हिंदी साहित्य में 'सरस्वती' पत्रिका है।

दादा अगस्तीन महेश कुजूर धुमकुड़िया पत्रिका द्वारा मजबूत नींव डाली गई कुड़ुख साहित्यिक परंपरा के गीतकार हैं और हमें उसी कुड़ुखर गीत-संगीत की दुनिया में ले जाते हैं, जिससे आधुनिक समय में आदिवासी समाज धीरे-धीरे बहुत पिछड़ चुका है। हम असमान आधुनिक 'विकास' में नहीं 'आदिवासी विकास' में पिछड़ रहे हैं। वास्तविक आधुनिक विकास तो अभी दुनिया में कहीं है ही नहीं। जो विकास है इन दिनों वह तो विनाश है। इसीलिए हमारे पुरखे लड़े और आज की पीढ़ी भी इससे लड़ रही है।

गीत के फुलों का यह गुच्छा इस ख्याल से एक उपलब्धि जैसा है। उपलब्धि इसलिए कि जब लोग गीत गाना भूल रहे हों, इसका आना गीतों के वापस लौटने जैसा है। अगस्तीन दा अपने गीतों से गीतों की परंपरा को वैसे ही लौटा लाने की प्रेरणा दे रहे हैं, जैसे हम मृत्यु के बाद भी आत्माओं को घर भितराते हैं, ताकि यह विश्वास बना रहे कि परिवार का सदस्य मृत जरूर हो गया है पर आत्मा के स्तर पर वह हमारे बीच ही मौजूद है।

गीतों का यह अनुपम गुच्छा सौंपने के लिए उन्हें बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

वंदना टेटे

राँची : सरहुल, 2016

जाते-जाते ...

कत्थ डन्डी टुडुर (पाड़ुर) आल उज्जना मरा तङंआ अखि-पखि ता कइट्टका का एथ्रने काना हवाल ननू फुर्चआनर, एकदानि दव मलदव घोक्ख आलर गे आदर तारिऽई।

टुडुस एन्नेम जिया ख़ोंरना, जिया सालना, नून्जना घोक्ख ननू अकय गड्डी नु बरचा का इस गहि कत्थ डन्डी जुदेम एम्बा अरा नून्जना रासीन सार तिऽई। आसे रऽई का कुड़ुख बचउर पुना रासीन अरा पुना लबजनन अङिय आनुम इ पुथिन सहरआ आङ्गोर। एन दब बाख़दन का 'पूँप पून' टूडु बचउर इदिती पुना एम्बा सार ओर।

मु. संय बर्नार्ड मिंज

दिनांक 21.10. 2015 — पूर्व विधायक गुमला

(दुखद संयोग है कि उनकी शुभकामना छपने के पूर्व ही वे दिवंगत हो गए, सुखद संयोग कि मैं उनसे यह संदेश ले पाया।)

कतार

निङहय चाड़ रऽई

एड़पा नु अयङ बङर गे
चोन्हा भई-बहिनर गे
ख़द्द ख़र्रारीन उज्गआगे
सवङ केरका पच्चो पचगिर गे, निङहय चाड़ रऽई

खोड़हानु साधरूउरिन सुसरऽआगे
खिलपतियारिन जोलजूआगे
दुखलियारिन संघरा ननागे
मलकारगे डिढ् चिज्आ गे, निङहय चाड़ रऽई

पद्दा खेपनु मलदव ईकूर गे
असपंयड़ा इरूर गे
पीख़र्का सोढ़र्कर गे
पद्दा खुट्टुरिन बर्जआगे, निङहय चाड़ रऽई

राजीनु मलदवन मेटाबआ गे
सयगुटी ननुरीन खेद्आगे
बींड़र्कारिन खोंड़आगे
बेलूररीन लूर खट्टागे, निङहय चाड़ रूऽई

तङअर नु अयङ कत्थन बीड़आगे
ख़ीरिन-डन्डीन बच्छ बआगे
कुडुख कत्थ टूड़ा जोगाबआगे
कत्थ लुखारीन हद्कआगे, निङहय चाड़ रऽई

तुम्हारी जरूरत है

घर में माता पिताओं के लिए
प्रिये भाई बहनों के लिए
बच्चों को अगुवाई के लिए
निर्बल बुजुर्गों के लिए तुम्हारी जरूरत है

समाज में, सताये जाने वालों के लिए
दुखियों को दिलासा के लिए
दबे कुचलों को सहारे के लिए
अभावग्रस्त लोगों को सांत्वना के लिए, तुम्हारी जरूरत है

गांव घर में, भटके लोगों के लिए
तुम्हारी राह देखने वालों के लिए
शोषित पीड़ितों के लिए
फूट डालने वालों के विरोध के लिए

सूबे में भ्रष्टाचार मिटाने के लिए
षड्यंत्रकारियों को खदेड़ने के लिए
लोगों को संगठित करने के लिए
अज्ञानियों को ज्ञान देने के लिए तुम्हारी जरूरत है

अपने लोगों में मातृभाषा के विकास के लिए
कथा-कहानियाँ संजोने के लिए
कुड़ुख साहित्य रचने बचाने के लिए
साहित्य मशाल प्रज्वल्लित करने के लिए, तुम्हारी जरूरत है।

आम्बा कोड़ा काननू

किर्रा बरा मेना से ओहरे आलर!
अम्बा कला भइया एकसन कालगदय
कुन्दरऽअर पर्दकय उसुगकय एकसन
ख़द्द परिया धूलिनु विच्चकय
खन्नेम बड़ा-पकरी मन्न अर्गकय
नुखुर नखर्ना अरा छुरू पिठवइर
खनेम लोका गुटी बिच्चकय
किय्या अच्च अरा ओरना ख़ेख़ेल
गुलईर धरअर मन्न-मन्न मेन ईरकय
केबना कोड़नन् मेन्जकय सहचकय
अडडो लथचा पहें उइनन् अडियाचकय
परता टोड़ङ मन्जा निङती सोहान
टुकु-टंगरा नु ओक्कर पाइड़कय
खूड़ी डगरेन निंग्हय सौसे चोन्हाति
नित्की नित्की रचा बाचकय
अखड़ा धुमकुड़ियानु जूडिर गने
करम-खद्दी-बेन्जा रागेन मेन्ताचकय
नाल टोंका उइयो चाँख़ओ बीरिहों
तीनना लोला रागेन पाईड़कय
इन्ना एन्देरगे अन्ति गेच्छा राजी
अम्बर काला लगदय, किर्रा से
अम्बा कोड़ा काननू।

छोड़ दो पलायन

लौट आओ सुनो ओ लोगों
मत जाओ भाई कहाँ चले जा रहे हो
जन्मे बढ़े पले कहां तुम
बचपन धूल मिट्टी में खेला
कभी जामुन तो कभी आम डूम्बर
कभी बड़ पीपल गाछ चढ़े
लुका-छुपी और छुर्र पिठो
कभी तो लोकागुटी खेले
नीचे कांटों और तपती जमीन पर
गुलेल लेकर गाछ वृक्ष ताके
डांट गाली सुना सहा
बैलों के लात सहकर जोतना सीखा
वन पर्वत में तुम्हारे गीतों की गूंज
टुकु टंगरा में बैठ कर तेरा गाना
गाँव टोले में तूने अपने प्यारे गीतों से
गाकर रचा दिया, तुमने
अखड़ा धुमकुड़िया में संगियों संग
करम सरहुल राग सुनाया
दोन डांड़ हल चलाते समय
मीठे प्रेम भरे गीत गाया
फिर क्यों आज दूर देश
चले आ रहे हो, लौट आओ
मत जाओ परदेश

चेड़ा परिया

एकसन केरा चाँवर घुघरी अरा ख़ेल
एकसन केरा डमुआ अरा नगेरा

उरखा लिक्कन मलकर-मलकर
चोद्आ लिक्कन धूली कुहड़ा

मला मूंधरिऽई अकय जिया सालई
चम चमरआ लगिया ख़ेक्खानु बेड़ा

एङहय रागेन ओरखअर
बरआ लगियर जूड़ी पेल्लर एकाबेड़ा

मना लगिया बिरान एङहय बिगर
पद्दन्ता आ कोंहा अखड़ा

ओतख़िम टोड़ङ कानागही डिढ्
हुलकूरकन अजगुत उख़ा मड़ा

ओहरे जिया संवग गही उरूब
मल इलूचकन ए-थरा लकड़ा

एङहय अरगनाति अजगुत लेंवख़रअर
झखआ लगिया मन्ने गही अग्गी डाड़ा

ओहरे एकसन केरा, एङहय आ परिया चेड़ा

युवावस्था

कहां गया चावंर घुंघरू और मांदर
कहां गया ढोल व नगाड़ा

निकलता मैं नाचता मचलता
तब उठता था धूल यूं

नहीं भूलते वो दिलकश दिन
चमचमाते थे मेरे हाथों में बेरा

मेरे गीतों को सुनकर
आती थी जब गाँवों की युवतियां

मेरे बगैर गाँव का बड़ा अखड़ा
जब बीरान हो जाता था

अकेले ही पहाड़ पढ़ने की हिम्मत
और झांकना बाघों के कन्दराओं में

अहा! क्या हिम्मत ताकत होता था
बाघ शेर देखकर भी न डरा

मेरे चढ़ने से गाछ का झुकझुक जाना
और उसका टूटने टूटने को होना

आह! कहां गया मेरा वो युवावस्था

मना नीनिम पोक्ता दवां

टूड़र बचअर हुदा खोंड़चकय
लुरकुड़िया अरा अखड़ेलता सनद ख़क्खकय
लुका लेक्खा बिल्लीन ओन्दअर बरा
नेड्डा सतरी उज्जनन् खेपूआ
निङहय खोड़हा गे हो चिंहुट नना
नहड़ाती आरिन बच्छबडअना तिहानना
हर्छआ तंङअन नेडडा खतरी
धजा मनर होर्मारिन जमकुट नना
संवसे खोड़हन नेवई नु एकागे
ओर्मारिन एरा नीनिम सिखबऽआ
बरना परिया गे मना नीनिम पोत्का दवां
हऽई नीनिम नमुद मनोय अजुब
अयङ बङर गही मुल्लीन एत्तआ
एकदा नहड़ा रऽई निङ मइय्या
नन्जा निङ जुकुर सङेरीन
मल्ला अन्जुर लगे डिढूनना
निङहय लुखारी गही रम्फतुरू
खोड़हा खतरी घोक्खउर गही गोंठकम्आ
नेड्डा ता मलदव गन्दे घेसड़न
एक अम पन्दहे हों एर्रा नेप्पा
लेड़पोयआ सङेर मूड़ोर निङन
पहें चुड्डानु तङअन दोखदार अख़अर
अइद्को दरघा गने निङ गुसन बरओर
अमके कोल्लम मना एकअम हों
जोक् सस्ती मनो निङ्गा पहें
उन्दुल निङहय कयास खन्जपा रूपे
ओर्मर मनोर निङहय तबेनु

बऽअनर 'नन्मुहीतिम पेटो इलची
एंवोखनन् डिढ़ती बेज्जआ
लेवंख़रका बैराखिन ताका फुली बीरि
ख़ापागे सगरखने नीनिम कोटवार रज्आ
चाचा लेक्खा पोक्ता मना
ख़ोसरा लेक्खा मना निसोन्द
इ छोलदारी अरा बेल्खा गही
नीनिम जयपुई तलदय
अमके तेबरज्आ सगरखने लघ्रआ
मइय्यन्ता उर्बस बराकइत चिऽओस
हऽई बेल्ख़ा गे निङहय चाड़ रऽई

तुम्हीं बनो मजबूत नींव

पढ़े लिखे और ज्ञान अर्जित किया
पाठशाला कालेज की डिग्रियां ली
मशाल जैसी रौशनी बिखेरकर
समाज के लिए जीवन जियो
और इसकी भी चिन्ता करो
लोगों को शोषण से मुक्त करते हुए
लक्ष्य के लिए लोगों को इकत्रित करो
समाज को सच्चाई में चलने के लिए
देखो! सभी को तुम्ही सिखलाओ
आने वाले समय के लिए बनो मजबूत नींव
हां तुम्ही आदर्श बनोगे निश्चय ही
माता-पिताओं का कर्ज उतारकर
मुक्ति पाओ-हल्का हो जाओ
एकजुट करो ढूढ़ों अपने लायक साथियों को
कठिन काम नहीं है, हिम्मत बाँधो
अपने मशाल की रोशनी से
समाज के लिए सोचने वालों का दल बनाओ
समाज की बुराई और अन्ध विश्वास को
हर हाल में उखाड़ फेंको
नासमझ लोग तुम्हें धोखा देंगे
फिर अपने को दोषी समझ
दोगुने उत्साह से तुम्हारे साथ आएंगे
तुम कभी भी विचलित मत होना
तुम्हें निराशा तो होगी, परन्तु
तुम्हारा प्रयास फल देगा
सभी तुम्हारी ही राह चल पड़ेंगे
कहते हैं हाथी, सूई से डरता है

सीने में ताकत समेटों
झुकते झंडे को हवा तूफान से
पहरा तुम्हें हर घड़ी देना है, तुम्हीं पहरेदार बनो
पत्थर सा दृढ़ बनो, नदी सा स्वच्छ
इस समाज-देश के लिए तुम्हीं वंशज हो
ना बुझने वाले चिराग सा जलो, सृष्टिकर्ता तुम्हारे साथ है
हां तुम्हारी जरूरत है देश को

अक्कु बेचोन मलकर-मलकर

एम्बा तीनना खन्द्रओ बीरि
कोकरो ख़ेर चींखना बेड़ा
ए न मेन्दन ढिङ्की सऽडना
अडडो बिछरऽअर होऽअदन मचा
बीड़ी अर्गना बेड़ा ए-रदन जूड़िन
अड़ी धरअर इन्दरा कालनन
गोहला टोङ्का कालो बीरी
ठमकारदन मेनर परतनता डन्डीन
ई द गा जूड़ी गही दिम रागे तली
पुतवीरि बेचों बीरि अखड़ा नु
जूड़ी मल्ला रिझ्झ मल्ला
आंदे अन्ति जूड़ी बरचा
अक्कु बेचोन मंलकर मलकर
भईर उल्लनता खड़दका एङहय
मिटरिऽई जिया हरियर मनी
जूड़ी पेल्लोर ए-रर मनिम
नितकिम एन्न मलख गे
पुना उल्ला पुना रिझ्झ ख़क्खदन

अब नाचूँगा मचल मचलकर

मीठी गहरी नींद के समय
मुर्गे के बांग देने की बेला
मैं सुनता हूं ढेंकी की आवाज
जब बैल खोलकर पुवाल देने ले जाता हूं
सूर्योदय के वक्त देखता हूं संगोती को
जब घड़ा लिए वह पनघट को जाती है
हल जोतने खेत की ओर जाते वक्त
ठिठकता हूँ किसी के गीत सुनकर
यहा तो संगोती ही है! उसी की आवाज है!
सन्ध्या अखाड़े में नृत्य के वक्त
संगोती नहीं है, नाचने मे मजा नहीं है
वो देखो! वह आ गयी,
अब नाचूँगा मचल मचलकर
पूरे दिन की थकावट
मिट जायगी मन में हरियाली होती है
जब उसे देखता हूँ।
नित्य मैं काम करने में
नया बल नयी उमंग पाता हूँ।

बेमयां

मन्न गही अग्गी डाड़ा नु
खेलकूओ अरा चपाईल नु
चरी-चरी खोना कमूअर
बिड़ना चेंपन आद मोंघरअर

किय्या **अ**इट्टका मईरनुम
बी टिड़ना पलकना अन्नुम
चरा चिलपी नन्जर उंदरिऽई
तंगूआ मोख़नन् खद्दगे बिऽई

ताका फुली अरा एख़ा बीरी
ख़ापी जन निऽई उर्मी बीरी
एंरा ख़ाख़ा एन्ते लूरगर
आलर लेक्खा आद बुइधगर

पहें उन्दुल आ बोंलो ओड़ा
मनरकि पर्दका जोड़ार
तंगियो तम्बन अरा मन्नन
नेख़अन अम्बर काली एकसन

मल्ला इबड़ागे एड़ा पल्ली
अबंगेम आद मंया मोंह बल्ली
पहें महेशस एन्देरगे
अम्बर का दस पूसउरीन नेकागे

निर्मोही

वृक्ष की उंची डाली पर
खोड़हर या चट्टानों के चपाईल में
तिनका-तिनका चुनकर घोंसला बनाकर
धूप बरसात से बेफिक्र

नीचे चन्द तिनकों का विछौना
अण्डे देकर सेना फोड़ना
चारे दाने लाता नित्य
अपने बदले नन्हों को खिलाकर

आंधी तूफान ठंडक में
हरदम ही देखभाल करता
देखो! पंक्षी इतना होशियार
इन्सानों सा वह समझदार

पर एक दिन वे नन्हें पंक्षी
बढ़ जाते हैं जोड़े के रूप में
माता-पिता और वृक्ष को छोड़कर
जाने चाले जाते हैं कहां?

नहीं है, इनको घर द्वार
तभी तो इन्हें माया मोह नहीं है
पर महेश क्यूं
छोड़ कर जाता है, जन्म देने वालों को

घोक्खदन चींख़दन

आलर मोंख्रनर तंगआ नेगनन
तिहा मला नन्नर खोंड़हन चोद्नन्
अम्बा लगनर तंगआ नलना पाड़नन्
खेपूआ लगनर अएन्धएम उज्जनन्
एरदन नेड्डा गही एब्स्रते कानन्
तंगआ नेग चुड़र्रा गही आ एम्बन
इन्ना मोंख्ररअर परियन्ता कत्थन
छछेम एका लगनर नन् डगरेन
एयका कमनुम बचकन उज्जनन्
ए-रदन नन् चालोन नहड़ा नु अंङिआनन्
अंड़चअर आनदन मेना एङहय सड़न
नेगुसन पड़गोन तंगआ दुक्खनन
ए रर लहुका गही डगमगरनन्
घोक्खदन नेलता हवालन
खोड़हन्ता बैराखी गही ए-रदन लेंवख़र्नन्
तिहा नना लगे उज्गजा धजान
ए-न नितकी नितकी आनदन
मला मेन्नर जमकुट मना बऽअनन्
लाड़ागे डिड़घरर गही मलकन
खन्न-मिट्की खन्न मिट्की
घोक्खदन चींख़दन

सोचता हूँ रोता हूँ

लोग भूलते है अपने रीत-रस्म
समाज को उठाने की कोई चिन्ता नहीं
छोड़ रहे हैं अपने नृत्य-गीत
यूं ही जी रहे हैं जीए जा रहे हैं
देखता हूँ समाज को भटकती राह में।
अपने समाज के स्वादिष्ट रीत नीत
आज भूल रहे हैं पुरखों की बातें
चुपचाप चले जा रहे हैं दूसरों के रिवाज पर
बल्कि उधार में दूसरे सभ्यता को अपनाते हुए देखता हूँ
गिड़गिड़ाता हूँ सुनो मेरी आवाज
किससे शिकायत करूं किसे कहूं अपना दुःख
देखकर डगमगाती नैया।
चिन्तित हूँ कल की हालत पर
समाज के झंडे को झुकते देखकर
कुछ तो जुगत करो। उठाओ, झण्डे को,
नित में गुहार लगाता हूँ
कोई नहीं सुनता है एकजुटता की बात
उद्धार करने के लिए, हिम्मतवालों की कमी पर,
पल पल

सोचता हूँ, रोता हूँ।

मोसगा

छाचकी रऽई मोसगा नम मइंऽय्या
एन्दरा हो मल ईथरिऽई किय्या मइंय्या

एवं उल्ला रऽओत जुट् जुट् उख़ानू
हछुद नना लगे उबार मनोत

सवंसे झारखंड नु बिल्ली ननर
तंगआ खोड़हन उजग्ओत

एवं उल्ला लस्सोत नन्नर गहीन
एवं उल्ला कोड़रओत नाम

निर्दन्द अम्बा रऽआ अक्कुचोऽआ
एरा बेल्खा़ अयङ मोल बिद्दी

निङहय पाब ईरी लाड़ा खतरी
टूड़र बचअर बरआ आनी

गेयान् मलकाति छाचका मोसगन
बरा नठाबऽओत निजनियत्ती

नमन बच्चागे सयगुटी नन्नर
खलबर बोङोर मूड़ोर इस्तले

तुंगुल एरदस महेशस नितकिम
मानी मना ओङो का एन्ने

एरो ख़ेख़ेल नम्हय चोऽअनन
ख़क्खोत जोलजोर ननू उन्दुल

धुआँ

छाया है धुआँ (धूंध) हम पर
कुछ भी नहीं दिखता है उपर न नीचे

कितने दिन रहेंगे अंधेरे में
आन्दोलन करो चलो उद्धार होना है

पूरे झारखंड में रौशनी फैलाकर
अपने समाज को उद्धारेंगे

कितने दिन लोगों की मजदूरी करेंगे
कब तक मार सहते रहेंगे।

बेफिक्र मत रहो अब उठो
देखो मातृभूमि मूल्य मांगती है

तुम्हारी राह देखती है उद्धार के लिए
पढ़ लिख कर आगे आने को

अज्ञानता रूपी छाया धुआं को
आओ नष्ट करें ईमानदारी से

हमें लूटने के लिए षड्यंत्र करते हैं।
वो लूटेरे भागेंगे यहाँ से

सपना है महेश का प्रतिदिन
क्या सचमुच हो सकेगा ऐसा

हमारा विकास दिखेगा जग को
पाएंगे हम मुक्ति क्या एक दिन?

एन कालोन कोडा

काला लिइक्की अम्म डगरेनु
सड़ा चिच्चकन मल्ला मिन्जकी

टुंगरी महय्या पाइड़कन डन्डी
उरखर एड़पन्ति मला ईरकी

अखड़ा नु तोको बीरि हो
इरकन कोल्लम निङहय मुहिन

चइल कालोन एन्न कोड़ा
अम्बर पद्दन्ता हियावनन्

खेप्पअर उल्लन बग्गेम किर्रोन
ए रोन निङहय कोक्खेनु पाकर्का

ओन्टा कोरा नु, ओन्टा बेतरानु
ओन्टा डुरियारना ख़ेक्खा धअर

अन्ति ओन्दय कालना मोन्जरा
पद्दन अम्बर एन कालोन कोड़ा

मैं जाऊँगा कोड़ा (परदेश)

जा रही थी पनघट की राह पर
मेरी आवाज तुमने नहीं सुना

टुंगरी के उपर मैंने गाना गया
तुमने उस पर भी ध्यान न दिया

अखाड़े में नाचते समय भी
तुम्हारे मुख पर खुशी नहीं थी

चला जा जाऊँगा मैं परदेश
गांव का माया मोह छोड़कर

लम्बे अरसे बाद लौटूंगा, तब
तुम्हारे गोद में देखूँगा एक बालक

एक पीठ पर, एक गोद पर
एक का तुम्हारी अगुंली पकड़ चलना

तो लो अन्तिम जोहार!
गाँव छोड़ मैं चला परदेश

खद्द परिया

पइरी पुतबीरि छउर नु
चेंप बड़ही बिड़ना नु
किलकारना पइंय्या ओरना नु
मल चक्खी खे़ड्डु चाचा रूगड़ीनु
लोट्रनर चोतोर धूली नु
गन्दे घेसड़ा बड़ही नु
हेतेड़ मलका ख़द्द परिया
डेगनर हुदहुदर्ना चिच्च पक्खे
अरगनर टटखा जम्बु मन्ननु
मल एलच्नर लाता लोप्ओ नु
सोहान मनी ख़द्द एड़पा
धईन मन्ननर अयङ बङर तङआनु
अम्मलेक्खा निसोन्द आर धी जिया
एका दवले ख़द्द परिया

बचपन

सुबह शाम गलियों में
बाढ़ वर्षा धूप के
खिलखिलाना जाड़ा गरमी में
कंकड़ पत्थर पर पड़ते पैर
धूल कीचड़ में लोटते
गन्दा बहता बाढ़ का पानी
बेफिक्र बचपन का जमाना
हिदकती आग में कूदकर फाँदना
चढ़ना आम जामुन के पेड़ पर
डर नहीं है बांबी बिल से
सोहान होता बच्चों से घर
धन्य हैं उनके माता-पिता
बहता पानी सा शुद्ध उनका जीवन
कितना सुन्दर है बचपन

लुखारी सलगआ

एन्देर पन्दहे
नेड्डा ता घेसड़न नेप्पोत ताँड़ओत
नलख अन्जुर मन्जा
लगे लुखारी सलगूआ
छोल दारिन एजूना मनो
झुम्बहा नु नमुद बेद्दना गहि
हहुद नना, कोटवार मना
दरघन खो़ंड़आ
मोकर्का अम्बा रआ
निचोत तरिकन अम्बा रऽआ
पोक्ता दवां मल्ला तंगआ
एन्ने अम्बा घोखआ
नरमिया मन्नुति मल्ला पड़ता
अरगनी-उटुरनी, खेड्ड चप्पो -कुक चप्पो
सगर तरा हुड़मुड़र्आ
चेनखो़ जुकुर तिहा नना
मलता निङहय जिरनन एरो खे़खे़ल
दोखदारी निङ मइंय्या मनो
नन्जा जोल जोरनन्
चुडडानु बीढ़नन् कट्टोय
मल्ला अन्जुर कयास लगावऽआ
एरा सोना ए-रा हिरा
अम्बा निस्बारऽआ
निङहय बौंसा तुले
अम्म थाक बत्तो
घस्सी अम्बा एल चा
पार मुन्ध चखा रऽई असन
पुङना रऽई निङा

जलाओ मशाल

किस भांति
समाज की बुराई का खात्मा करेंगे
काम कठिन है
चलो मशाल जलाओ
समाज को जगाना होगा
समूह में आदर्श ढूढ़ने का
आन्दोलन करो, नेतृत्व करो
समूह को समेटो
मौन मत रहो
बेफिक्र शांत मत रहो
अपना आधार कमजोर है
ऐसा मत सोचो
नम्र बनने से काम नहीं चलेगा
पूरब-पश्चिम उत्तर दक्षिण
चहुंओर जूझ पड़ो
बाज की भांति प्रयासरत रहो
अन्यथा तुम्हारा अन्त देखेगा जमाना
अफसोस तुम्हें तब होगा
ढूढ़ो मुक्ति की राह
आखिर मंजिल मिलेगी
कठिन नहीं है राह, प्रयास करो
चलो सोना! ए हीरा!
मत निराश हो
बल ताकत इकत्र करो
तुम्हारी हिम्मत से
समुद्र भी सूख जाएगा
कभी मत डरो
उस पार किनारा है
वहां तुम्हें पार लगाना है

एरने जोह एन

उज्जना गही ख़ोदख़र्ना माँख़ा
ओतख़िम जिया चींखी

उल्ला चन्दो चान कट्टिया
मला ख़क्खरा इन्दरिईम सुनगन

एङन इसन अम्बर ओतख़िम
चोन्हस केरस नन बेलख़ा

खन्न-मिट्की-खन्न मिट्की
डगरेन ए रेन जोह एन

बरओस आस मलता
तइय्योस इन्दरिईम सरवना

खन्न पूख़िया केरा
नुन्जई उम्बलख़ो

अक्कु न खन्दरअम उरखी
न मनी जिया संथोक

नीकइम ए रर बरा
आस एअदस एकसन

आस बिगर ए-न उज्जोन
एवं उल्ला ई हवाल

अनय बीड़ी अनय चन्दो
निमा फहम रऽई का

मूड़र केरस एन्देरगे
एन्देर दोख मन्जा एङती

बाट तकती हूँ

जीवन की कष्टमय रातों को
अकेले मैं रोती हूँ
दिन महीने वर्ष बीते
कोई सन्देश नहीं आया
मुझे यहां अकेली छोड़
प्रिय गया कहीं परदेश
पल पल राह देखती मैं
आएगा वो या फिर
भिजवायगा कोई सन्देश
आंखे सूज गई
दुखता है दिल
अब न नींद आती है
न दिल में है चैन
कोई तो देख आवे
वो है कहां?
उसके बिना जीयूं मैं
कब तक इस हाल
ओ चांदा ओ सूरज!
तुम्हें कुछ है पता
छोड़ गया क्यूं वो मुझे
कौन सी खता हुई मुझसे।

अज्जी तेङा लगिया

पइरी पुतबीरी खुड़ती लोहाड़ी
दव-दव डन्डी -ख़ीरी
तेङा लगिया मेन्तआ लगिया, अज्जी खद्द बेड़ा
नेत-नेग गही, नेडडा चालो गही
खुड़िन्ता, पद्दा खेपन्ता
कोड़ा केरका कालर कि बेड़ारकर गहि
असंपयड़ा आ मुन्जकर गहि
जिया नुन्जना सोग्गे सारना कत्था
चिगालो बन्डो मुंया रोयां किंको पेटो
सिकटा हड़हा बरया बरहा चिड़र्रा बोड़ा
पदन्ता ओय-अड्डो एड़ा मनख़ा
मन्न-मास परता-तोड़ङ ता गहि
कुको-कुकोयर जूड़ि-पांतिर गहि
अंब्रना एबूसर्ना
बेल भरिया लदनी-बेड़ा, डोली-डांगर
चिर्खि कांड़ना, गोल्लर बेलर गहि
ढिबा चिर्खि बिठ्ठी बेगारी अरा सोट्टा कोड़नन
नम बइनिर मइंय्या
आर गहि मलदव एरनन्
अरा एन्ने दव मलदव उर्मि बरनिका
अज्जी नेङा लगिया
एम्बा-तिस्सा, नकवा डुरू, गिठी, तेतड़ा डहु
पिठारू, बोबतो पुटु-ओसा छिरया अरा मानी,
खर्रा कनवत डेरांगो तेला बड़ा चिट्ख़ा
पकरी डुम्बारी पोड़हो जम्बु पपड़ा पुसरा खंड़ो
जिनहोर लवा नौर लट्ठा मदगी अरा तेताली चियां
गोडडा गुड़लु खिलबिरी करई फुटलगो कोम अड़ख़ा

किट्टि दुड़खे चीघरी रासी खर्रा ओसा पुटु- कीरो
परतन्ता उर्मि खन्जपा
लम्बड़ों ढुढ़रिया, लुती, दुम्बा-मटा
उर्मि उमि खन्जया गही एम्बा
अज्जीन लोभाबऽआ लगी।
अदि गे ख़ेख़ेल उज्जना गहि सिंया
मुन्जआ लगी
ने तेङो अबड़ा एम्बा कत्थन
खन्न अज्जी गही बेब्रआ लगी
बई खड़दा लगी।

दादी बतलाती थी

सुबह शाम रात दोपहर
मीठी अच्छी गीत कहानी
सुनाती थी बतलाती थी दादी बचपन में
रीत-नीत समाज का चलन
गाँव गलियों का
परदेश जाने, जाकर लौट न आने और
उनके अन्तहींन इन्तजार का
दिल दुखाने वाली बातें
सियार, खरगोश, बाघ भालू हिरण हाथी
लकड़बग्घा बन बिलाव, वनसुअर, गिलहरी, अजगर
गांव के बैल-गाय बकरी भैंस
वृक्ष-गाछ बन पर्वतों का
युवक युवतियों संगी-संगोतियों
का छूटना-बिछड़ना खो जाना
जमींदारों का बोझ उठाना, लदनी बैल और डोली डांगर
उन्हें डोलयों में यत्र-तत्र लेना लाना
एक पैसो में बाझ पहुंचाना बैठ बेगार और लाठियों की मार
हमारी बहनो पर
उनकी बुरी नजर
और ऐसी ही अच्छी बुरी बातें(किस्से)
दादी बतलाती थी
मीठे खट्टे नकवा डुरू गिठ्ठी, तेतड़ा डहु
पिठारू बोबतो रूगड़ा खुखड़ी छिरया और मानी
करील, खंटी, डेरांगो, केउंद बड़ पीपल
पाकड़ डुम्बर पोड़हो जामुन पपड़ा, कुसुम खंड़ो
मकई लावा, बाजरा नौर लट्टा महुंआ के साथ इमली का चिंया
गोड़ा-गोंदली, खिलबिरी(जिरहुल) सरला, फुटकल, कोएनार

पीयर-पीठवर धवई फल का रस, भेलवा
जंगल के सभी फल
झूलने वाले तथा खोड़हर के मधु, लुती, भांवर तुम्बिल, देमता
उन सभी वन पदार्थों का स्वाद
दादी को लुभा रहा है
पर उसकी जीवन सीमा सिमट रही है
कौन बतलाएगा, वो बातें,
आंखे बुझ रही है, मुंह थक रहा है उसका

अयङ

चोन्हा दुलार मंया निन्दर्का
नमन कुन्द्रत्आ गे अकय नून्जनन्
सहऽई अयङ

अयङ गही छती नु
दुदहि उन्नुम खन्द्रदत्
तुंगुल नु चीखंदत्
ठांवहेम नमन्
खींउची अयङ

अयङ गही एंवोख़ नु
निर्दन्द खंन्द्रदत नाम
नमन खन्द्रत आनुम
डन्डी पाड़नुम
बिज़तई अयङ

अदि गही खन्न ओड्डाति
ओछोर मनो बीरि
नमनु कइरखा टिप-ई अयङ

मल चिओत दुक्खे नाम
पोल्लना बेड़ा सुसरओत आदिन
पोल्लोत किर्तआ मूली पहें
अयङ गही नन्जका गे

माँ

प्यार ममता से भरी
हमारे जन्म के लिए कठिन दर्द
सहती है मां,

मां के सीने में दूध पीते खो जाते हैं
सपनें में रोते हैं हम
झट हमें
सीने से लगाती है मां,

मां के सीने लग
निर्वाध सोते हम और
हमें सुलाने को लोरियां गाती
जागती रहती मां

उसकी आंखों से
ओझल होने समय भी
हम पर करखा लगा कर ही
संतोष पाती है माँ

उसे कष्ट न होने देंगे
थकने की अवस्था में, सहारा बनेंगे
चुका नहीं सकेंगे हम
उसकी ममता का मोल

एङन चींखन्आ

अन्ति फिर बरा एङन बित्लआ
अन्ति फिर बरा एङन चींख़त्आ
चइल बरा, चइल बरा, बरा नी,

बुका बन्धहा मन्जा
ख़न्ने बाहआ हेल्लरा
कुहंकी एन्ने चुऽई
एकन्ने धुका उर्खी, अन्ति....

ख़ोदख़नन् होअर कला निङहय
एकदन जे नीन चिच्चकय
मलता तेङा एङन
इबड़न एकन्ने सहओन, अन्ति

अक्कु गा इ सृजनती
एङा चला काला मनो
एका डगरेनु का एङहय चोन्हस केरस
अबड़ा डगरेन एङा ख़क्खना रऽई, अन्ति....

आओ फिर रुलाओ

आओ फिर मुझे रूलाओ, मुझे सताओ
चले आओ,

दिल बांध बन गए
आंखे बह चलीं
आहें ऐसी उठीं
जैसे आंधी चले

वो गम ले जाओ
जो तुमने दिये हैं
या बतलाओ मुझे
इनको कैसे सहें

अब तो इस दुनियां से
मुझे चल पड़ना है
जहां कि मेरा पिया गया है
वहीं राह मुझे पाना है

खाड़ मझहिं अम्म भंउरी नु

चन्ध मुन्ध बदाली छाच कि रऽई
मुर्रन ती ख़न्न चोन्धरारकि बिऽई
रस गरदा चेंपप पुंइय्या लगी
ताका अड्ड सड्ड तागरऽआ लगी
पच्चा लहुका, खाड़ गही गड्डी अम्म
मझहि ता भंउरी नु
लहुका डग मगरआ लगी
छमहे छमहे उज्झना मुन्जूआलगी
बुदर्ना उर्खा लगी
हंका चिऽइदन एन
चांड़े बरा धरमे
मलता भोरे-भोरनु
जिया चला कओ
निङ तरा मेन एरदन
टक्टक्रआ पाब एरदन
नीन तरिकन रऽअदन
मेना एङहय सड़न
अंड़चअर गोहरारदन्
एङन नेप्पर ओत्थरआ
निङहय पोक्ता एंवोख़नु
एङन कंखियअर ओत्थरआ
ससतीति एङन बछाबऽआ
अम्बा बिढ़ना एरा
भोंकरा रदन मुन्ध वारेन्ता चाचन् ए-रर
जिया निस्वारआ लगी
निङहय दबी नु होअर एङन
जोलजोरनन् एदूआ

जरगाधरचकन पंहे बुचड़ारा
ख़ेख़ेल गहि सिंया मुन्त्रआ लगी
लगे नीनिम एङ्हय लहुकन कड़तूआ
मल गोहरारदय ए-देरगे नीन
गुन्हा ननर।

बीच मझधारा जलभँवर में

घने काले बादलों का अंधेरा
बादलों की गरज से चुधियाती आंखे
मूसलाधार वृष्टि
तूफान और तेज हवा
पुरानी नाव तेज नदी का गहरा पानी
और बीच का जल भंवर
नौका डगमगाती सी
ऐसे में जीवन के अन्त का अहसास
सिहरन और कम्पन का उभरना
गुहार लगाता हूँ
जल्दी आओ प्रभु
वरना सस्ते में
जान चली जायगी
तुम्हारी ओर ताकता हूँ
एकटक निगाहें अटकी है
मेरी आवाज सुनो
तड़पता गुहारता हूँ
मुझे उबार लो, निकाल लो
तुम्हारी बलिष्ठ भुजाओं में
कस लो मुझे सीने में अपने
कष्ट से मुझे बचाओ
मत लो मेरी परीक्षा
सामने चट्टान आता सा देखकर
हाहाकार उठी है मुझमें
निराशा घेर चली है
तुम्हारे सीने में लेकर मुझे
मुक्ति दो

तिनका जो मैंने पकड़ा बो भी छूटा
दुनिया और जीवन डोर छूटने लगी है
अब तुम्हीं मेरी जीवन नैया पार लगाओ

डहरे एद्आ धर्मे

डहरे एद्आ धर्मे डहरे डहरे कालोम
बिल्ली चिऽआ धर्मे बिल्ली बिल्ली कालोम

इ ख़ेख़ेल राजीनु उज्जा बल्ला लगदम
लूर चिऽआ धर्मे एम उज्जा बलदम

गडडी डिप्पा डहरे ए म खतर चोऽअदम
सहाय चिऽआ धर्मे पयहम एका बलदम

इ ख़ेख़ेल उज्जना नु खरा कोल्लम रऽई
जोलजआ एमन धरमे अकय सस्ती रऽई

मलदव गही मोसगा एमनु छाचकी विऽई
निङहय रम्फ तहय्या जुट्-जुट उ ख़ा रऽई

ए म निङहय ख़द्दम निङन बेद्दा बरदम
सड़ा एम्हयन मेना निङनु भरोसनन्दम

निङन अम्बर एमन नेहो लाडुर मइलकर
निङहय खेड्ड मूलीन कालोम एकसन अम्बर

राह दिखा प्रभु

राह दिखा प्रभु उसी रहा चलें हम
रोशनी दिखा प्रभु रोशन राह चले हम

इस दुनिया में हमें जीने का ज्ञान नहीं
ज्ञान दो प्रभु हम जीने नहीं जानते

उबड़-खाबड़ राह है हम गिर पड़ते
सहारा दो प्रभु बलहीन चल नहीं पाते

यह जग जीवन है दुख कष्ट भरा
मुक्ति दो प्रभु जीवन कष्ट भरा है

अज्ञानता रूपी धुंआ है हम पर छाया हुआ
तेरी रोशनी हमें दो कि दूर अंधेरा हो जाय

हम तेरी सन्तान तुम्हें ढूढ़ने आए
आवाज हमारी सुनो कि तेरा ही है भरोसा

तुम्हें छोड़ हमारा नहीं कोई उद्धारक
तुम्हारे चरणों को छोड़ दूर कहां हम जाएं?

मदगी

(असारी रागे)

टप-टप न मदगी खतररिऽई
गुचय दइगो पेसा कालोत

पइरी बीरि मदगी खतरिऽई
गुचय दइगो पेसा कालोत

नीन धरअय डउड़न
ए न धरओन बउगीन, गुचय....

फग्गु चन्दो मदगि खतरऽिई
गुचय.....

कीड़ा आड़ मनो
दुक्खे टेका मनो, गुचय....

परता मंइय्या, परता पेन्दा, गुचय....

बबुस गे टुङ्की, मइंया गे सुपली
गुचय.......

महुवा

(असारी राग)

टप-टप गितरा महुवा
चलो दीदी बीनने चलें

सुबह-सुबह महुवा गिरता है
चलो दीदी महुवा बीनने

तुम दउरा पकड़ो
मैं पकड़ू नाचू, चलो दीदी

फगुवा चांद महुवा गिरता है
चलो दीदी...

अकाल भूख आड़ देगा
दुख में आड़ (टेका) देगा

पर्वत उपर, पर्वत नीचे, चलो दीदी...

बाबु के लिए टोकरी मइंया के लिए सुपली
चलो दीदी....

पोल्लोय बोङा

पोलोय बोङा उर्बसति गेच्छा
गुन्हा ननर
पोल्लोय नुखुरआ आसति ओलता
गुन्हा ननर
पोल्लोय ठकूआ एकअम हों आसति
गुन्हा ननर
पोल्लोय अम्बरआ आसित बिड़दो
गुन्हा ननर
पोल्लोय एका असबिगर जोक् हों
गुन्हा ननर

भाग न सकोगे

भाग न सकोगे-मालिक से दूर
गुनाह करके

छुप न सकोगे किसी आड़ में
गुनाह करके

ठग न सकोगे कभी उसे
गुनाह करके

छूट न सकोगे अन्यत्र कहीं
गुनाह करके

चल न सकोगे उसके बिना कुछ भी कदम
गुनाह करके

पछताते क्यूं नहीं, फिर तुम
गुनाह करके

मन्नन एरा

बीड़ना चेंप कीरना
सगर खन्ने इज्जका

अतखा पूंप ख़न्जपा
उर्मी गा आलर गेम

पादा गदा डाड़ा
बोकला गूटी जड़ी

एंख नन्दी ओर्मारिन
बच्छबअदी ओर्मारिन

भेद्दे मल्ला नेकति हो
ओर्मर निङा ओंन्टम

लेबदा चाचा टोङए
निङ मंइय्या चलरिऽई

पँहे मल्ला कुंह कारना
चान चाप पूंप अतखा

खन्जपा ती झबरारदी
आलरीन मोंख़त्आदी

उइजी नु आलरती
मल्ला इन्दरिऽईम दरकार

किंको आरा जियालो
मानिम निङती ख़क्खनर

कइड़काती पच्चना गूटी
ओर्मर नफा निङती ख़क्खनर

निङहय दव नमूदतुरू
आलरिन अन्नेम सिखाबअदी

,
पहें एंवदा अङियआनर
आलर निङहय गुणन....?

वृक्ष

धूप वर्षा जाड़ा
हर घड़ी खड़ा

पत्ते फूल फल
सभी तो मनुष्यों के लिए

जड़ लासा, डाली
छल तक औषधि

छाया सभी को तुम्हारा
बचाना है सभी को

भेद नहीं किसी से भी
सभी तुम्हें बराबर

लेवदा पत्थर कुल्हाड़ी
सभी का बार तुम पर

आह नहीं भरते, पर
वर्ष-वर्ष फूल पत्तों

फलों से लद जाते हो
लोगों को खिलाते हो

बदले में लोगों से
नहीं है कोई चाहत

वनप्राणी सभी जीव
सचमुच जिन्दा तुमसे

दातुन से लेकर बुढ़ापे तक
सभी तुमसे लाभ लेते

तुम्हारे इस आदर्श से
इन्सानों को भी यही सीख देते

पर कितने लोग अपनाते
ये जो तुम्हारे गुण हैं

खाड़ ख़ोसरा

उल्ला मांख़ा हूद-हूद, हूद-हूद
आलरगे बाहई ख़ांड़

गेच्छा टोड़ङ ती एत्तर बरऽई
निसौन्द अम्म नमागे सुसरिऽई

नाल-टोङ्का नु अड़ख़ा- चेख़ेल
हरियर मनी बट्गि टेवाँ

सरगत ख़ज्जन ओन्द्र रऽअर
नम्हय टोङ्का नालनु अम्बी

पयदा बढ़ाबिऽई सलगिऽई
आलरगे ख़ोसरा बराकईत

इन्जो-ककड़ो अन्आ मन्आ
पूसऽई नमा गे मने रकम

आलर ओय-अऽडो जियालोन
ओनका मेट्बिऽई सुथर अम्मति

एम्आ खज्रआ नोड़ा खतरी
अम्म पुराबिऽई भईर चान

उल्ला मांख़ा सगर खंनेम
मुन्धिम कालनन् सुरतिई

बडई का एङहय लेक्खा
पच्छली किर्रर अम्बा एरा

नदी

रात दिन कल-कल, कल-कल,
इन्सानों के लिए बहती नदी

दूर पर्वत से उतर आती
निर्मल पानी हमें ला देती

खेत-टांड़ में साग-पात
हरा भरा बगान और टेवां (गरमा धान)

पैदावार मिट्टी ढोकर लाती
खेतों पर छोड़ जाती

उर्वरा बढ़ाती, फसल लहराते
इन्सानों के लिए यह बरदान

मच्छली केंकड़े रंग विरंगे
इसमें मौजूद इन्सानों के लिए

मानव-प्राणी व पालतू चौपायों को
प्यास बुझाती स्वच्छ पानी से

मानव हित के सभी कामों में
नित्य यह जल सुलभ करती

रात दिन हर घड़ी हर पल
चलना ही यह सिखलाती

कहती है मेरी तरह बढ़ते रहो
पीछे मुड़कर मत देखो।

एङन चींख़ा चिऽआ

मने भइर एङन चींख़ा चिऽआ
दुक्खे डन्डी एङहयन पाड़ा चिऽआ

जोक् आसगहि (अदिगही) इयादनु एबस्रआ चिऽआ
ओतख़िम खेपतारा माखा आ इयादनु
ख़न्नन चँयदआ चिऽआ
अनेतिम खोद्ख़कय एमन
अक्कु सलतंत एङन उज्जा चिऽआ
ख़क्खरओत एकअम डहरे नु
इकलअम अनचिन्ह गही घोख
एङन और हों आदरतारआ चिऽआ
डन्डी गा नीन हो पाइड़कय मानी गही
मुदा अबड़न एङन मोघ्रआ चिऽआ
हुरम! अक्कु एङन चींख़ा चिऽआ

मुझे रो लेने दो

जितना जी चाहे मुझे रो लेने दो
गम के गीतों को मेरे गा लेने दो

कम से कम उसकी यादों में खो लेने दो,
गुजारी जो रातें तन्हां उनकी याद में
आंखें भीगो लेने दो,
बहुत ढाए हैं सितम हम पर
अब चैन से मुझे जी लेने दो,
कल मिलें अगर किसी राह पर
कभी थे अजनबी वह एहसास
मुझे फिर भरमाने दो,
गीत वो तुमने भी गाए थे वफा के
मगर उन्हें भूल जाने दो
बस अब मुझे रो लेने दो

ए-न बाचकन ...

अना धरमे निङहय ए-रना ती ए-न खतरकन केरकन
निङती ए-न गोच्छा मन्जकन

धरमेस बाचस ...
एन्देर गे ख़ेख़ेल उज्जनानु जोड़रदय नीन
इद उन्दुल निङहय मला रऽओ
इउन्दईम नीन आलो खुर्जी जत्नओय
निङहय मुट्ठी ती उरखोदिम कओ
ओर्मर गा इ ख़ज्जतिम बन्चका रअनर
अरा इन्नुम बिलरओर हों कओर
इद मानी तली नीन अख़आ
आलय एन्देरगे मानीति मुंही बिड़द्दय

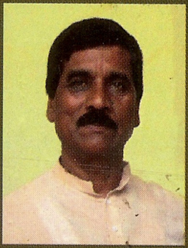
इउन्दा दोख नीन नन्नुम कालगदय
ऐन्ने का खुर्जी दिम निङहय धर्मे तली
अम्बा इतरारआ इबड़ा गे
पोल्लोय जत्नआ इबड़न नीन
गच्छरआ दोखनन धरअर धर्मेसगही ख़ेड्डन
आस गही दया ओर्मर गे पुंइय्यी
मलता कोल्लम मनोय,
एन्देरगे नेलागा निङ्गा ख़ेख़ेल उज्जनन अम्बर कालना रऽई।

धरमेस बोला ...

मैंने कहा ...
ऐ खुदा मैं तेरी नजरों से गिर गया
तुझसे दूर हुआ

धरमेस बोला ...
क्यूं जुड़ता है इस दुनिया से तू
ये इक दिन तेरा न रहेगा
कितना भी तू जोड़ ले सुख साधन
तेरी मुट्ठी से फिसल ही जाएगा
सभी बने हैं इस धूल से
और इसी में मिल भी जाएंगे
ये हकीकत है तू जान ले
ऐ इंसा क्यूं सच से मुंह जोड़ता

इतने गुनाह तू करता जा रहा है
जैसे दौलत ही तेरा खुदा है
मत कर इतना गुमां इस पर
इन्हें तू जज्ब न कर पाएगा
कबूल ले गुनाह धर ले चरण खुदा के
उसकी रहमत हर के लिए बरसती है
वरना चैन न पाएगा, क्योंकि कल
तुझे संसार छोड़ जाना है।



अगस्तीन महेश कुजूर

जन्म : 14 मार्च 1956

मातृक-पैतृक गाँव : गुटुवा, जोकारी (घाघरा), गुमला (झारखण्ड)

पिता : स्मरणीय जोवाकिम कुजूर

माता : मगरीता कुजूर

शिक्षा : बी. कॉम, पत्रकारिता में स्नातक और कुड़ुख साहित्य में स्नातकोत्तर, राँची विश्वविद्यालय

हिंदी, कुड़ुख और नागपुरी में नियमित लेखन. आदिवासी, युगश्री, निष्कलंका, डहर, झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा पत्रिकाओं सहित विभिन्न दैनिक पत्रों में रचनाओं का प्रकाशन और आकाशवाणी, राँची से प्रसारण.

'बसंत आउर आलक', 'पइरी मन्जा' और 'निभोर' नाटकों का मंचन.

जेएनयू (दिल्ली), वर्णपुर (पश्चिम बंगाल), हैद्राबाद, भोपाल, नागपुर, जमशेदपुर और रांची में साहित्यिक व्याख्यान.

शीघ्र प्रकाश्य रचना : शरतचंद्र चटर्जी के बांग्ला उपन्यास 'बिंदूर छेले' का कुड़ुख अनुवाद.

'कुड़ुख लिटरेरी सोसायटी, 'झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा' और 'असुर विकास समिति', बिसुनपुर, गुमला एवं 'कुड़ुख भाषा विकास परिषद' झारखंड के साथ जुड़कर सामाजिक-साहित्यिक विकास के लिए सक्रिय.

संप्रति : टाना भगत महाविद्यालय, घाघरा, गुमला में अध्यापन. राँची विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) में कार्यक्रम पदाधिकारी.

संपर्क : नेतरहाट रोड, आनंद नगर, घाघरा, गुमला-835208 (झारखण्ड)

चलभाष : 93348348

PYARA FOUNDATION

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन

चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची-834009 झारखण्ड

www.kharia.in | www.akhra.org.in | pkfranchi@gmail.com

₹100

9 789381 056608 >